DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
कारक प्रकरण
Part -5
LIVE
14-05-2024 05:00 PM
ROJGAR WITH ANKIT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड

अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

सूत्रः "ध्रुवमपायेऽपादानम् "

वृत्तिः अपायो विश्लेषः, तस्मिन् साध्ये ध्रुवमवधिभूतं कारकम् अपादानं स्यात् ।

सूत्रार्थः विश्लेष (वियोग, जुदाई या अलग होने) को अपाय कहते हैं। अपाय में जो अवधि बना हो वह कारक अपादानसंज्ञक होता है। यहाँ ध्रुवम् का अर्थ अवधिभूतं (स्थिर, अडिग) है तथा अपाय पद का अर्थ विश्लेष है (विच्छेद)। दूरीकरण की क्रिया में कोई वस्तु जहाँ से अलग होती है, उस कारक में अपादान संज्ञा होती है।

से (अलगाव।

सूत्रः " अपादाने पञ्चमी"

वृत्तिः अपादाने कारके पञ्चमी विभक्तिर्भवति ।

सूत्रार्थः अनुक्त अपादान में पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे: सः ग्रामाद् आयाति । (वह गाँव से आता है |)

- रामः धावतः अश्वात् पतति । (राम दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है।)
- श्यामः चलतः बसयानात् पतति । (श्याम चलती बस से गिरता है।)
- वृक्षात् पत्राणि पतन्ति । (वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।)
- भवनात् बालकः पतति। (भवन से बालक - गिरता है |)
- मोहनः गृहात् आयाति । (मोहन घर से आता है |)

वार्तिकः "जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसङ्ख्यानम् "

जुगुप्सा (घृणा करना/निन्दा करना), विराम (रुकना / ठहराव / थम हटना), प्रमाद (लापरवाही / आलस्य/ असावधानी) इन सभी अर्थ वा धातुओं के योग में पञ्चमी विभक्ति होती हैं।

जैसे धार्मिकः पापात् जुगुप्सते । (धार्मिक पाप से घृणा / निन्दा करता है ।)

- सज्जनः दुर्जनात् जुगुप्सते। (सज्जन दुर्जन से घृणा / निन्दा करता है |)
- छात्रः अध्ययनात् प्रमाद्यति । (छात्र अध्ययन से लापरवाही / आलस्य करता है।)
- रामः अधर्मात् विरमति । (राम अधर्म से हटता है ।)
- सः दुष्टेभ्यः जुगुप्सते। (वह दुष्टों की निन्दा / घृणा करता है ।)
- रावणः रामात् जुगुप्सते । (रावण राम से घृणा करता है ।)

सूत्रः " वारणार्थानामीप्सितः "

वृत्तिः वारणार्थानाम् धातूनाम् प्रयोगे य ईप्सितोऽर्थः तत् कारकमपादानसंज्ञं भवति।

सूत्रार्थः वारण अर्थ में अर्थात् हटाने की क्रिया में जहां से हटाया जाए उस ईप्सित कारक की अपादान संज्ञा होती है।

जैसेः

- किसानः यवेभ्यः गां वारयति । (किसान जौ (एक फसल) से गाय को हटाता है |)
- पिता अग्नेः सर्पं वारयति । (पिता आग से साँप को हटाता है ।)
- आरक्षकः गृहात् चौरं वारयति । (पुलिस घर से चोर को हटाता है ।)

सूत्रः " अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति "

वृत्तिः व्यवधाने सति यत्कर्तृकस्य आत्मनः दर्शनस्य अभावम् इच्छति तदपादानं स्यात्।

सूत्रार्थः अन्तर्ध्यान (छिपना / छुपना) होने की क्रिया में जिससे छिपा जाए उस कारक की अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसेः कृष्णः मातुः निलीयते । (कृष्ण माता से छिपता है ।)

- चौरः आरक्षकात् निलीयते । (चोर पुलिस से छिपता है ।)
- पुत्रः पितुः निलीयते । (पुत्र पिता से छिपता है।)
- शिष्य : गुरोः निलीयते । (शिष्य गुरु से छिपता है |)

सूत्रः " आख्यातोपयोगे"

वृत्तिः नियमपूर्वकविद्यास्वीकारे वक्ता अपदानसञ्ज्ञः स्यात् ।

सूत्रः नियमपूर्वक विद्या स्वीकार (विद्या अध्ययन) करने में जिससे (शिक्षक, गुरु, आचार्य, उपाध्याय, व्याख्याता, अध्यापक) विद्या स्वीकार की जाती है, उसकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसेः

- शिष्यः गुरोः अधीते । (शिष्य गुरु से पढ़ता है।)
- रामः अध्यापकात् अधीते । (राम अध्यापक से पढ़ता है |)
- देवदत्तः उपाध्यायाद् अधीते । (देवदत्त उपाध्याय से पढ़ता है |)

गुरुः म ना वे गुरोः गुरोः गुरौ

1 2 3 4 5 6 7

साधुः साधुम् साधुना साधवे साधोः साधोः साधौ

सूत्रः "जनिकर्तुः प्रकृतिः "

वृत्तिः जायमानस्य हेतुः अपादानं स्यात्।

सूत्रः उत्पन्न होने की क्रिया में जहाँ से जन्म या उत्पन्न होता है.. उसकी अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसेः ब्रह्मणः प्रजाः उत्पद्यन्ते / प्रजायन्ते । (प्रजा ब्रह्मा से उत्पन्न होती है।)

- कामात् क्रोधोऽभिजायते। (काम से क्रोध उत्पन्न होता है।)
- गोमयाद् वृश्चिकाः जायन्ते । (गोबर से बिच्छू पैदा होते हैं)
- सङ्गात् कामः जायते । (साथ रहने से काम उत्पन्न होता है)
- कामात् क्रोधः उत्पद्यते । (काम से क्रोध उत्पन्न होता है |)
- बुद्धिनाशात् सर्वनाशः जायते । (बुद्धिनाश से सर्वनाश हो जाता है।)

सूत्रः "भुवः प्रभवः " (

वृत्तिः- भूकर्तुः प्रभवो यः, तत् कारकमपादानसंज्ञम् भवति।

सूत्रार्थः जहाँ से प्रकाशित होया जाता है या नदी आदि के प्रथम प्रकाशन स्थल की अपादान संज्ञा होकर पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसेः

- हिमालयात् गङ्गा प्रभवति । (हिमालय से गङ्गा निकलती है।)
- गङ्गा हिमवतः प्रभवति / निर्गच्छति । (हिमालय से गङ्गा निकलती है ।)
- विराटनगरात् बाणगङ्गा प्रभवति । (विराट नगर से बाणगङ्गा बहती है।)

सूत्रः "पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्"

वृत्तिः पृथक् विना नाना इत्येतैर्योगे तृतीया विभक्तिर्भवति, अन्यतरस्यां पञ्चमी च

सूत्रार्थः पृथक्, विना और नाना पदों के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसेः 2, 3, 5

- धर्मं/ धर्मेण / धर्मात् वा विना गतिर्नास्ति । (धर्म के बिना गति नहीं होती है।)
- रामं / रामेण / रामात् वा पृथक् सीता जीवितुं न शक्नोति । (राम के बिना सीता जीवित नहीं रह सकती ।)
- जलं/जलेन/जलात् नाना जीवनं नास्ति । (जल के अभाव में जीवन नहीं है ।)
- ज्ञानं / ज्ञानेन / ज्ञानात् पृथक् जीवनं नास्ति । (ज्ञान से अलग जीवन नहीं है।)
- विद्यां / विद्यया/विद्यायाः नाना सुखं न मिलति । (विद्या के अभाव में सुख नहीं मिलता है ।)

सूत्रः "पञ्चमी विभक्ते "

वृत्तिः विभागो विभक्तम् । निर्धार्यमाणस्य यत्र भेद एव तत्र पञ्चमी स्यात् ।

सूत्रार्थः विभाजन (अलग बतलाना) के अर्थ में पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है। और जब किन्ही दो में से एक को कम या ज्यादा के द्वारा अलग से दर्शाया या दिखाया जाता है तो विभाजन करने के लिए तरप् ईयसुन् प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जिससे कम या ज्यादा बताया जाए उसमें पंचमी विभक्ति होती है।

जैसेः रामः मोहनात् चतुरतरः । (राम मोहन से चतुर है।)

- सीता रामात् लघुतरा / लघीयसी । (सीता राम से छोटी है।)
- मोहनः सुरेशात् पटुतरः / पटीयान् । (मोहन सुरेश से पटुतर है |)

15 may

off

16 May

↓

षष्ठी, सप्तमी